Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (Third Year)

Subject: Hindi

Paper Code: HNG 101

Paper Title: Hindi Sahitya Ka Parichay 1

Unit: 1

Module Name: Gulli Danda

Module No: 7

Name of the Presenter: Ms. Anjeeta Velip

Transcript

गुल्ली डंडा

कहानी गुल्ली डंडा इस पर मैं आज चर्चा करने जा रही हूँ। इसकी रूपरेखा इस प्रकार से है- प्रेमचंद जी का जीवन परिचय, गुल्ली डंडा कहानी का कथानक, पात्र, उद्देश्य और भाषा शैली इस पर मैं चर्चा करने जा रही हूँ। सबसे पहले **प्रेमचंद जी का जीवन परिचय** प्रेमचंद जी का **जन्म 31 जुलाई 1880** लमही वाराणसी उत्तर प्रदेश में हुआ था। उनके माता का नाम आनंदी देवी तथा पिता का नाम अजायब राय था। उन्होंने **उर्दू भाषा** में लिखना प्रारंभ किया था। उसके बाद उन्होंने प्रेमचंद जी के नाम से हिंदी में लिखना शुरू किया। उन्होंने **अनेक विधाओं** में अपना योगदान दिया है जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, बाल साहित्य, संपादन भी किया है, अनुवाद भी उन्होंने किए हुए है।

उनकी **प्रमुख कृतियों** में **उपन्यास** उन्होंने लगभग 15 उपन्यास लिखे हैं उनमें से महत्वपूर्ण है **गोदान**, **गबन, निर्मला, सेवा सदन, वरदान और मंगलसूत्र**। मंगलसूत्र उपन्यास उनका अपूर्ण उपन्यास है। उसी प्रकार उन्होंने लगभग 300 से ज्यादा **कहानियां** लिखी हैं। उनकी उर्दू में लिखी सोजेवतन कहानी है जो अंग्रेजों ने जप्त कर ली थी। उसके बाद उनकी

कहानियां हिंदी में लिखी हुई है वह मानसरोवर 8 भाग में प्रकाशित है। उन्होंने दो **नाटक** भी लिखे हैं **कर्बला** और **वरदान**।

उनका **निधन** जो है वह **8 अक्टूबर 1936** में हुआ था। उनकी **विशेषताएं** इस प्रकार से है **प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना**। प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना 1936 में की थी। उसी प्रकार उनकी अनेक कृतियों पर फिल्में बनी है जैसे शतरंज के खिलाड़ी, गबन, सेवा सदन, वरदान इन **कृतियों पर फिल्में** बनी है। उन्होंने विभिन्न देशी- **विदेशी भाषाओं में अनुवाद** कार्य भी किया है। **कलम का सिपाही** और **कलम का मजदूर** शीर्षक से उनके ऊपर **जीवनी** भी लिखी गई है।

गुल्ली डंडा - कथानक

खंड १

आइए अब हम गुल्ली डंडा कहानी पर चर्चा करते हैं। **भारतीय खेल** कहानी की शुरुआत जो है वह भारतीय खेल गुल्ली डंडा इससे होती है। जहां पर लेखक जो है कथा नायक जो है वह गुल्ली डंडा खेल के बारे में बताते है कि गुल्ली डंडा जो खेल है वह भारतीय खेल है और सभी खेलों का राजा है। उस खेल में उसे मिठास महसूस होती है। जिस प्रकार से अंग्रेजी खेल है उस प्रकार से ये खेल नहीं है। ये खेल खेलने के लिए सिर्फ दो खिलाड़ी ही काफी है और उसमें ज्यादा पैसा या खर्च करने की भी जरूरत नहीं रहती है। इस प्रकार से कहानी की शुरुआत होती है। कहानी आगे बढ़ती हैं **गया और लेखक के वार्तालाप** से मतलब गया जो है लेखक के साथ गुल्ली डंडा खेलता है। खेलने के लिए जब वे सवेरे जाते हैं पेड़ की टहनियां काटते हैं और टहनियों से गुल्ली और डंडा बनाते हैं। और उसे वे दिन भर खेलते हैं। खेलते समय उन्हें नहाने खाने की परवाह या फिक्र नहीं रहती है। दिनभर खेलने में मस्त रहते हैं। खेलते समय किसी में भेदभाव नहीं रहती है।उच्च-नीच या अछूत की समस्या उनमें नहीं रहती हैं, समान रूप से वे एक साथ मिलकर खेलते है। उसी प्रकार **गया द्वारा प्रतिरोध** कहानी में दिखाई देता है। गया जो है वह गुल्ली डंडा खेलने में चैंपियन माना जाता है। हर कोई उसे अपनी टीम में लेना चाहता है। एक दिन जब गया और लेखक खेलते है तब लेखक और गया का झगड़ा हो जाता है क्योंकि गया को लेखक जो है गया को मौका देने के बजाय के घर जाना चाहते थे लेकिन गया उसे रोककर अपना दांव जो है वह देने के लिए कहते है लेकिन लेखक मानते नहीं हैं और घर जाना चाहते है लेकिन गया जो है उसे रोककर उसके साथ झगड़ा करते है और लेखक के पीठ पर डंडा भी मारते हैं जिसके कारण लेखक जो है रोने लग जाता है। तो लेखक रोता है यहां देकर घर गया वहां से चला जाता है। लेकर जो है वह थानेदार का बेटा रहता है और घर जाकर वह बात कि एक मामूली लड़की से मार खाई है यह घर में किसी से नहीं बताता है क्योंकि उसी समय घर जाकर उसे पता चलता है कि उसके

पिताजी का तबादला बड़े शहर में हो गया है और उसे यह खुशी थी कि इस छोटे से गांव को छोड़कर उसे शहर में जाना है इसलिए वह नये शहर में जाता है।

खंड 2

20 साल बाद लेखक की वापसी उसी गांव में होती है। लेखक जो है वह इंजीनियर होकर उसी गांव में वापस आ जाता है। वहां पर आ जाने के बाद जिन क्रीड़ा स्थलों पर वे खेल रहे थे उन क्रीड़ा स्थलों पर जाकर वहां की यादें ताजा कर रहे थे। उसी समय उसे कुछ लड़के खेलते हुए नजर आते हैं और उसमें से उनसे पूछकर वह गया कि पूछताछ करता है तो वहां से एक लड़का जो है वह गया को बुला कर लाता है। गया से मिलने के बाद उनमें आपसी बातचीत हो जाती है दोनों एक दूसरे के हाल-चाल पूछ लेते हैं।

उसके बाद **तलाश** मतलब यहां पर लेखक जो है उसे उत्सुकता रहती है गांव में आकर फिर से गुल्ली डंडा खेलने की इसलिए कथनयाक जो है वह गया से मिन्नत करता है कि वे दोनों इस खेल को खेलें। इसलिए वे खेल खेलने के लिए एक जगह की तलाश करने भीमताल में जाते है। तो वहां वे **खेल का आरंभ** करते हैं दोनों एक साथ खेलते हैं लेकिन जो समानता पहले बचपन में उनके खेल में थी वह समानता वहां पर लेखक को नहीं दिखाई देती है। कई बार लेकर जो है उससे पीछा छुड़ाने की या उसे जैसे हम कहते हैं कि चीटिंग करने की कोशिश करता है फिर भी गया जो है वह चुपचाप रहता है। उसकी सब बातों को मान लेता है और वही गया जो है बचपन में क्या करता था कि एक छोटी सी भूल होने पर झगड़ा करने उतालू हो जाता था। उसी प्रकार यहां पर लेखक को गया का व्यवहार बदला हुआ नजर आता है। वे दोनों वहां से खेलने के बाद शाम के वक्त घर लौट जाते है। तो घर लौटते समय गया जो है दूसरे दिन खेल देखने का **निमंत्रण** देता है। तो दूसरे दिन लेखक जो है गया और बाकी साथियों का खेल देखने जाता है। तो वहां पर क्या होता है कि जब गया खेलता है तो वह पहले जैसी चंचलता उसमें दिखाई देती है। जिस प्रकार से वह बचपन में मामूली सी गलती होने पर झगड़ा करने जाता था उसी प्रकार से वह झगड़ा करता हुआ दिखाई देता है। तो यहां पर लेकर सोचने लगता है कि क्या पद जो है वह उन दोनों के बीच बाधा बन गया है या उसका अफसरी पर जो है वह उनके बीच बाधक बन गया है। ऐसा लेखक को लगने लगता है और वह सोचता है कि इस प्रकार से उसने जो है वह उसे एक मौका दिया या उसे एक दया का पात्र समझा और उसके साथ उस दिन वो खेल गया। तो इस प्रकार से कहानी का अंत हमें दिखाई देता है।

पात्र परिचय

कहानी के पात्रों में **कथानायक** या लेखक जो है वह थानेदार का बेटा है। पढ़ाई में भी ईमानदार है, समानता है। उनमें मतलब वे जब छोटे थे तब उनमें कोई भेदभाव नजर नहीं आता था। किसी को अपने आप को उच्च जाति का है इसलिए वह इस प्रकार से नहीं मानता था। सभी को वह समान रूप से देखता समझता था। तो इसप्रकार कथानायकजो है नयी जगह पर जाने के लिए उत्सुक रहता है। तो इस प्रकार की विशेषता जो है वह उनमें दिखाई देती है। उसी प्रकार दूसरा मुख्य पात्र कहानी का है **गया**। गया जो है वह गुल्ली डंडा खेलने का चैंपियन रहता है। वह शरीर से दुबला पतला रहता है। आर्थिक स्थिति जो है उसकी चमार की रहती हैं गरीब हैं और एक व्यक्ति के यहां पर सायस का काम करते है।

उद्देश्य

कहानी देश है **प्राकृतिक समानता का समापन** लेखक ने यहां पर उद्घाटित किया है कि बचपन में एक साथ खेलने वाले साथियों में वो समानता रहती है लेकिन वही सब साथी बड़े हो जाते है और उनमें पद और प्रतिष्ठा जब आ जाती है तो उनमें वह समानता नहीं रहती है। उनमें असमानता आ जाती है। उनमें सहजता वो उनके व्यवहार में सहजता या वो समानता दिखाई नहीं देती है। इसका इस प्रकार उद्देश्य जो है लेखक ने कहानी के माध्यम से दिखाने की कोशिश की है। उसी प्रकार से पद सामाजिक और आर्थिक अंतर आदि आने के कारण मनुष्य मनुष्य के बीच जो है वह प्राकृतिक समानता का समापन हो जाता है समाप्त हो जाते है। **स्पर्धा का भाव** मतलब पद और प्रतिष्ठा या असमानता आ जाने के कारण दोनों व्यक्तियों में स्पर्धा का भाव निर्मित हो जाता है और यह होना भी स्वाभाविक उस समय हो जाता है। **बाह्य प्रभाव** के कारण प्राकृतिक आचरण जो है वह नष्ट हो जाता है और बनावटी सभ्य आचरण का जन्म हो जाता है। इस प्रकार से इस कहानी का उद्देश्य लेखक ने स्पष्ट किया हुआ है।

भाषा शैली

कहानी की भाषा शैली जो है **सरल और विषय अनुकूल भाषा** का प्रयोग यहां पर लेखक ने किया हुआ है। उसी प्रकार कहानी में **संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग** भी हमें देखने मिलता है। उसी प्रकार **उर्दू शब्दों का प्रयोग** भी कहीं जगह लेखक ने किया हुआ है। लेखक ने ज्यादातर **वर्णनात्मक शैली** का प्रयोग कहानी में किया हुआ मिलता है और कई कई विवेचनात्मक शैली का वर्णन किया हुआ मिलता है।